

पक्षियों का चमत्कारिक प्रवास

विश्वमोहन तिवारी

यह तो सचमुच आश्चर्य की बात है कि शरद ऋतु आने पर, ध्रुव कुररी नामक पक्षी (arctic tern) उत्तरी ध्रुव से प्रवास हेतु दक्षिणी ध्रुव के लिए उड़ान भरता है, और वसंत आने पर प्रजनन करने अपने घर लौट आता है। यही कोई 35,000 कि.मी. की अनगिनत खतरों से भरी तूफानी यात्रा करके। क्या यह आश्चर्य नहीं कि यह कुररी विपरीत ध्रुवों को जोड़ता है।

तुलसीदास ने रामचरित मानस में लिखा है 'जानि सरद रितु खंजन आए, पाइ समय जनु सुकृत सुहाए।' यह हमारे पुण्यों का सुफल है कि शरद ऋतु में खंजन (wagtail) आए। पर कहां से? यही कोई 5000 कि.मी. दूर, साइबेरिया, मंगोलिया आदि से हिमालय पार करके

आते हैं खंजन और हमें समृद्ध करते हैं, जलाशयों को, हिमालय को तथा भारत को सुंदर तथा जीवंत बनाते हैं।

स्वैसन-बाज़ (Swainson's hawk) उत्तर-पश्चिमी अमरीका से चल कर अर्जेंटाइना पहुंचते हैं। खंतिया हंसक (shoveller) यूरेसिया के 45 से 66 डिग्री अक्षांशों के क्षेत्र से भारत तथा अन्य देशों में प्रवास करते हैं। लाल वारिरंक (red knot) कनाडा के ध्रुवीय क्षेत्रों से दक्षिण अमेरिका के दक्षिण कोने पेटागोनिया तथा तियेरा दैल फ्यूएगो में प्रवास करते हैं। ये प्रवासी पक्षी अपनी खतरनाक यात्रा के दौरान भूमध्य रेखा क्षेत्र के सदाबहार वनों को पार करते हैं, किंतु वहां रुकते नहीं, क्यों? क्योंकि कहते हैं कि "ये अपने गृह क्षेत्रों के समान ही प्राकृत वास (habitat) तथा आहार की खोज करते हैं।" लेकिन अलास्का जैसे शीत प्रधान क्षेत्र में ध्रुव कूजिनी (arctic warbler) भूमध्यरेखीय फिलिपींस जैसे



ग्रीष्म-वर्षा के क्षेत्र में प्रवास करती है। लीजिए हमने पक्षियों के व्यवहार का एक नियम बनाया और किसी पक्षी ने उसे तोड़कर मानव की अकल को धता बता दी।

पक्षियों के लिए प्रवास कोई ग्रीष्म अवकाश नहीं है। उनका प्रवास तो जीवन-मरण की यात्रा है। यह तो मौसम के अनुसार, आहार-शून्य हो रहे प्रजनन क्षेत्र से किसी अन्य अनुकूल क्षेत्र तक के लिए साहसिक महा-अभियान है। जब भी पक्षी के गृह क्षेत्र में आहार का 'अकाल' पड़ना शुरू होता है, पक्षियों को विशाल साहसिक उड़ान भरने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

वास्तव में आज पृथ्वी पर जितने भी जीव हैं उनमें खोजने, घूमकर खोजने की सहजवृत्ति बराबर कार्य करती है। इसी सहजवृत्ति के कारण मानव अफ्रीका से निकलकर सारी पृथ्वी पर फैले। प्रवास करने वालों की खोज या तो

ऐसे आवास की होती है जहां उन्हें बेहतर या घर जैसा आहार मिल सके जिस पर वे अपने घर के पूरे आहार-शून्य मौसम में निर्भर कर सकें।

पक्षियों को फल और कीट तो हमेशा रुचिकर लगते हैं - बस उनके शावकों को प्रचुर मात्रा में प्रोटीन युक्त कीट आवश्यक होते हैं। अपने शावकों को वे भरपूर मात्रा में कीट दे सकें, संभवतः इसीलिए वयस्क पक्षी फलाहारी भी हो जाते हैं।

उत्तरी गोलार्ध में जब उत्तरी क्षेत्र में भयंकर ठंड पड़ती है, तब दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करें तो पहले समशीतोष्ण तथा बाद में भूमध्यरेखीय गर्म जलवायु मिलती है। और उड़ते रहें तो दक्षिणी गोलार्ध की ग्रीष्मकालीन भूमध्यरेखीय ऊष्ण जलवायु मिलती है। इससे भी और आगे उड़ते रहने पर समशीतोष्ण जलवायु मिलती है। अतएव अधिकांश प्रवास उत्तर-दक्षिण दिशाओं में होते हैं। जैसे अभी तक की जानकारी के अनुसार, पाइड क्रेस्टेड ककू दक्षिण अफ्रीका से मानसून के साथ भारत में प्रवास के लिए आते हैं और वर्षा पश्चात लौट जाते हैं। ये चातक पक्षी प्रवास क्षेत्र में प्रजनन करते हैं। यह उस नियम का अपवाद है जिसमें माना जाता है कि प्रवासी पक्षी अपने गृह क्षेत्र में ही प्रजनन करते हैं। लेकिन इन्हें प्रजनन क्षेत्र में शावकों के पालन के लिए पूरा समय नहीं मिलता। समस्या के हल के लिए मादा चातक अपना अंडा दूसरे पक्षी के घोंसले में देकर निश्चित हो जाती है।

प्रवास-मार्ग का निर्धारण पर्वत श्रृंखलाओं, सागर तट, हवाओं की दिशा, नदियों तथा विकास-प्रक्रिया आदि से होता है। आहार की सुलभता, शिकारी पक्षियों, जानवरों तथा मनुष्यों से सुरक्षा तथा लाखों पक्षियों के ठहरने के स्थान भी प्रवास-मार्ग का निर्धारण करते हैं। यथासंभव हवा की दिशा के अनुकूल उड़ना ही पक्षियों के लिए लाभकारी होता है। हवा का वेग उनके वेग में जुड़कर उनके यात्रा-वेग को बढ़ाकर, उनका यात्रा समय कम कर देता है।

किंतु अक्सर किसी भी उड़ान में, विशेषकर उत्तर-दक्षिण उड़ान में, पक्षियों को तिरछी हवा में उड़ना ही पड़ता है। जिसके कारण पक्षियों के सही दिशा में उड़ने पर भी, तिरछी हवा उन्हें अपने गंतव्य से भटका देती है। इस

भटकाव को ठीक करने के लिए एक नक्शे की आवश्यकता होती है तथा गंतव्य की पहचान (जैसे गंध) भी।

कपोत, विशेषकर ब्लू रॉक कपोत की उपजातियां अपने घोंसले का भूगोल तथा उसकी गंध खूब पहचानती हैं।

ऐसा भी नहीं है कि पक्षी क्षैतिज हवा का ही लाभ उठाते हैं, कुछ पक्षी ऊपर उठती हवाओं का भी खूब लाभ उठाते हैं। विशेषकर वे हवाएं जो धरती के तप्त होने पर गर्म होकर ऊपर उठती हैं जिन्हें थर्मल्स कहते हैं। आप शायद सोचें कि थर्मल्स का लाभ लेकर चील, बाज़ जैसे पक्षी एक ही जगह पर चक्करदार उड़ान द्वारा ऊंचाई पर जाकर नीचे का विहंगावलोकन तो कर सकते हैं, किंतु हजारों कि.मी. का प्रवास कैसे कर सकते हैं?

स्वैन्सन-बाज़ लाखों की संख्या में पश्चिमी कनाडा से अर्जेंटाइना तक इन्हीं थर्मल्स का लाभ लेकर प्रवास करते हैं, उन्हें शायद ही कभी अपने पंख फड़फड़ाने पड़ते हों! ये थर्मल्स ज़मीन पर सतत मार्ग या नदी की तरह लगातार नहीं मिलते, वरन बिखरे हुए उर्ध्वगामी पवन स्तंभों की तरह मिलते हैं। इन थर्मल्स का मिलना पर्वतों की धार की दिशा में अधिक सुलभ होता है। रॉकीज़ तथा एंडीज़ पर्वतों की धारों पर बिखरे हुए ऊर्ध्वगामी पवन स्तंभों का लाभ उठाकर ही स्वैन्सन-बाज़ यह 15,000 कि.मी. लंबी यात्रा बिना पंख फड़फड़ाए करते हैं। आप पूछेंगे कि बिना पंख फड़फड़ाए किस तरह?

सुबह 10-11 बजे जब थर्मल्स उठना प्रारंभ करते हैं तब इन बाज़ों के झुंड उसे ढूंढते हैं। जैसे ही एक को यह थर्मल मिल जाता है, सारा झुंड उस पर आकर चक्करदार तैरते हुए ऊंचाई पर चढ़ जाता है। जब थर्मल्स इतने कमज़ोर हो जाते हैं कि उन पर और ऊपर चढ़ाई नहीं हो सकती, तब बाज़ों का झुंड अगले थर्मल की खोज शुरू करता है। इस खोज में वे धीरे-धीरे तैरते हुए ही नीचे आते हैं, पंख फड़फड़ाकर अपनी ऊर्जा का व्यय नहीं करते। वे ऊंचाई की कीमत पर अपना उड़न-वेग बनाए रखते हैं। फिर जैसे ही किसी बाज़ को थर्मल मिला कि सारा झुंड वहीं पहुंच जाता है।

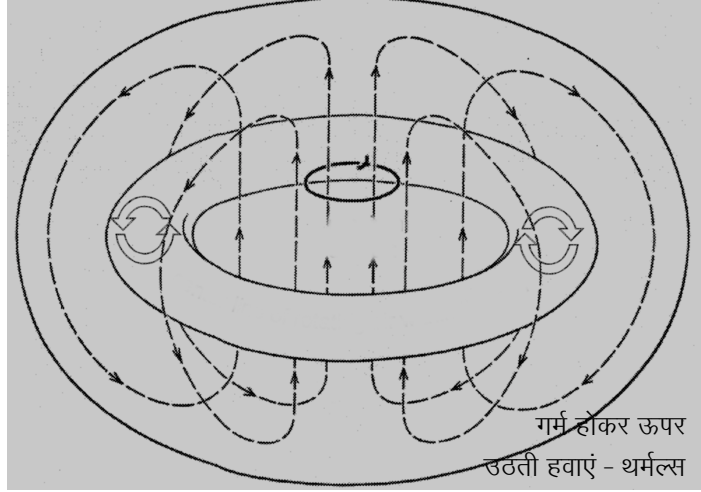
इस तरह ऊपर-नीचे करते हुए वे 15,000 कि.मी. की

दूरी लगभग तीन माह में तय करते हैं। उनकी उड़ान का औसत वेग 10-20 कि.मी. प्रति घंटा ही आता है। किंतु वास्तव में 15,000 कि.मी. की दूरी तय करने में, झूला झूलते हुए वे लगभग 50-60 हजार कि.मी. की उड़ान भरते हैं। उनके उड़ान का वेग लगभग 50-60 कि.मी. प्रति घंटा होता है। इन स्वेन्सन-बाज़ों का यह प्रवास पक्षियों का विश्व में सबसे लंबा प्रवास है। किंतु बाज़ों को इतना लंबा प्रवास करने की क्या आवश्यकता? अरे भई, जहां उनका आहार उड़कर गया, वहीं तो बाज़ों को जाना

पड़ेगा! कुछ गिद्ध भी इसी तरह प्रवास पर जाते हैं। जिन पक्षियों के पंखों पर अधिक भार होता है, वे थर्मल्स का उपयोग करना पसंद करते हैं।

प्रवास हमेशा अंतर्महाद्वीपीय अभियान नहीं होता। भारत के अधिकांश प्रवासी जल पक्षी शेष विश्व के जल पक्षियों की तरह अपद्रुषित तथा पर्याप्त जल राशि की खोज में स्थानीय क्षेत्रों में मौसम के अनुसार स्थानीय प्रवास करते हैं। पर्वतों की ऊंचाइयों पर रहने वाले पक्षी, शीतकाल में आहार दुर्लभ होने पर नीचे की हरी-भरी भूमियों की तरफ उतर कर प्रवास करते हैं। इसे तुंग प्रवास (altitudinal migration) कहते हैं।

जैसे ही तुंग प्रवासन का यह नियम हमने बनाया कि कोई पक्षी इसे अवश्य तोड़ेगा। और वह है अमरीकी रॉकीज़



तथा एन्डीज़ पर्वत जूखला का वासी ब्लू ग्राउस। यह पक्षी ग्रीष्म ऋतु में तो नीचे घाटियों में रहता है और पतझड़ आते ही यह पहाड़ की ऊंचाइयों की तरफ पैदल ही चढ़ना प्रारंभ कर देता है। इसे चीड़ आदि शंकु वृक्षों की सूखी हुई 'सुइयां' खाने में आनंद आता है। वैसे, यह तुंग प्रवास नियमित रूप से करता है, जो विश्व में सबसे छोटा 300 मीटर का प्रवास है।

पक्षी प्रवास, अंतर्महाद्वीपीय अभियान तो क्या, सचमुच में एकमात्र सार्वलौकिक 'चमत्कार' है जिसमें आकाश, धरती तथा पाताल तीनों लोक शामिल होते हैं। पाताल लोक अर्थात् जल-लोक में भी पक्षी खूब विचरण करते हैं। पृथ्वी का कोई भाग नहीं है जहां पक्षी प्रवास न होता हो! इसमें अरबों पक्षी हिस्सा लेते हैं। (स्रोत फीचर्स)

स्रोत सजिल्द

स्रोत के पिछले अंक

राशि एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें।

एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर के पास, भोपाल
(म.प्र.) 462 016